JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और संस्थान के शैक्षिक वातावरण के संबंध में उनके कार्य के उत्तरदायित्व का अध्ययन

खुशबू कुमारी[1], डॉ बिनय कुमार[2]

[1]शोधार्थी, रामचन्द्र चंद्रवंशी विश्वविद्यालय पलामू झारखण्ड

[2]शोद्य निदेशक, रामचन्द्र चंद्रवंशी विश्वविद्यालय पलामू झारखण्ड

सारांश

राष्ट्रीय विकास में शिक्षा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा न केवल व्यक्ति की विकास में मदद करती है, बल्कि यह समाज और राष्ट्र को भी उन्नत बनाने में योगदान करती है। माध्यमिक शिक्षा, जो विद्यार्थियों के जीवन को महत्वपूर्ण बनाने का कारण बनती है। माध्यमिक शिक्षा न केवल विद्यार्थियों को ज्ञान और कौशल प्रदान करती है, बल्कि उन्हें समाज में साकारात्मक योगदान करने के लिए तैयार करती है। माध्यमिक स्तर का विद्यार्थी जीवन के सबसे क्रियाशील और संवेदनशील दौर में होता है। इसमें विद्यार्थी न केवल बच्चा रहता है, और न ही पूर्ण वयस्क, उच्च शिक्षा तक पहुँचने का माध्यम माध्यमिक शिक्षा है, जिससे विद्यार्थी अपने अंतर्निहित क्षमताओं का सही रूप से अनुसरण करता है और समाज में सशक्त योगदान करता है। शिक्षा के सिद्धांत न सिर्फ व्यक्ति को सशक्त बनाते हैं, बल्कि इससे समाज में समरसता, सामंजस्य और सामाजिक न्याय की भावना बढ़ती है। माध्यमिक शिक्षा के माध्यम से ही समाज में समरसता और समानता की भावना को बढ़ावा मिलता है, जो एक सशक्त और समृद्ध समाज की नींव है। माध्यमिक शिक्षा के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व और उत्कृष्टता की शिक्षा होती है, जिससे विद्यार्थी अपनी रूचियों और प्रतिभाओं के आधार पर अगले कदमों में अग्रगामी हो सकता है। इससे न केवल व्यक्ति की विकास में मदद होती है, बल्कि यह राष्ट्र को भी नेतृत्व और उत्कृष्टता की दिशा में बढ़ावा देता है।

मुख्य शब्दः माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक, शिक्षण प्रभावशीलता, संस्थान के शैक्षिक वातावरण, शिक्षकों का उत्तरदायित्व का अध्ययन।

प्रस्तावना

राष्ट्रीय विकास में शिक्षा का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। भारत जैसे विकासशील देश में माध्यमिक शिक्षा का महत्व विशेष रूप से है। जिस प्रकार से मानव शरीर का महत्वपूर्ण भाग उसका धड़ होता है उसी प्रकार शैक्षिक संरचना का मध्य भाग उसकी माध्यमिक शिक्षा होती है। प्राथमिक व उच्च शिक्षा की महत्वपूर्ण कड़ी माध्यमिक शिक्षा ही है। यही शिक्षा किशोरावस्था की जनशक्ति का स्रोत है। देश के भावी कर्णधार माध्यमिक शिक्षा के ही ढाँचे में बनते और बिगड़ते हैं। सभी क्षेत्रों में नेतृत्व करने की क्षमता इसी स्तर पर विकसित की जाती है। माध्यमिक स्तर का विद्यार्थी न बालक होता है और न बड़ा और वह तेजी से एक स्थिति दूसरी स्थिति में पहुँच रहा होता है। वह वर्तमान मूल्यों को संदेह की दृष्टि से देखता है। वह एक विचित्र आदर्शवाद से ग्रसित तथा संसार का पुनर्निमाण अपनी इच्छानुसार चाहता है। यह जीवन के आँधी एवं तूफान के दिन है। इस विचित्र एवं नाजुक स्थिति में विद्यार्थियों को उचित निर्देशन एवं मार्गदर्शन केवल और केवल कुशल एवं प्रभावपूर्ण शिक्षक तथा उत्कृष्ट विद्यालयी वातावरण में ही

सम्भव है।वास्तव में योग्य, कुशल एवं प्रभावपूर्ण शिक्षक ही वह धुरी है जिसके चारों ओर सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया घूमती है। शिक्षक के सामान्य एवं कक्षागत क्रियाकलाप शिक्षक व्यवहार की ओर संकेत करते हैं और इन क्रियाकलापों पर शिक्षक की प्रभावशीलता आधारित होती है। इस सफलता के सन्दर्भ में शिक्षक के प्रति अन्य व्यक्तियों द्वारा प्रतिक्रियाएं प्रदर्शित की जाती हैं। ये प्रतिक्रियाएं शिक्षक की प्रभावशीलता को दर्शाती हैं। शिक्षक की प्रभावशीलता में उसकी शिक्षा तथा सामान्य व तात्कालीन ज्ञान, प्रेरित करने की योग्यता, शिक्षण कौशल, व्यवसाय से सम्बन्धित ज्ञान, पाठ्य सहगामी क्रियाओं का ज्ञान, कक्षा-कक्ष प्रबन्ध की योग्यता, समाज एवं विद्यालय के अन्य सदस्यों के साथ आपसी मेल-मिलाप का स्वभाव, संवेगात्मक रूप से स्थिर, सलाह, निर्देशन की योग्यता, नैतिक रूप से कुशल तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व को समाहित किया जाता है। इन सब क्रियाओं के प्रति विद्यालय के प्राचार्य, साथी समूह, स्वयं शिक्षक एवं विद्यार्थियों की प्रति क्रियाओं में जमुक शिक्षक की प्रभावशीलता के रूप में प्रेरित किया जाता है।किसी भी देश की शिक्षा प्रणाली की सफलता अधिकांशतः उस देश के शिक्षकों की गुणवत्ता एवं प्रभावशीलता पर निर्भर करती है। शिक्षकों का उत्तरदायित्व कक्षा में पाठ्य या विषय-वस्तु का शिक्षण ही नहीं वरन् राष्ट्र की चिंतनधारा को बदलने की शक्ति, व्यवसाय, चुनाव, सामाजिक जागरूकता, समाज व देश का विकास पाठ्य सहगामी क्रियाएं नवीन तकनीक की जानकारी देना भी उसका कर्तव्य है।वर्तमान समय में शिक्षित बेरोजगारी बढ़ने तथा अन्य विकल्प न मिलने पर विवश होकर व्यक्ति अध्यापन कार्य करने लगे हैं। विवशतावश शिक्षक बन जाने पर भी उनके सामने कुछ ऐसे कारक उत्पन्न हो जाते हैं, जिससे उनकी शिक्षण प्रभावशीलता प्रभावित होती है। उनकी योग्यता क्षमतानुसार उचित पद, सेवा सुरक्षा, वेतन, कार्य दशाएं प्राप्त साधन-सुविधाएं, वातावरण, संगठन का अभाव, सहयोगियों, प्रधानाचार्य, प्रबन्धकों के साथ उचित मानवीय सम्बन्धों के अभाव आदि के कारण शिक्षक कुंठित रहते है। परिणामस्वरूप वह अपने शिक्षण कार्य के साथ चाहकर भी न्याय नहीं कर पाते है। अतः उचित पर्यावरण एवं सहयोगात्मक व्यवहार न मिलने से शिक्षकों में अनेक मनोवैज्ञानिक समस्यायें उत्पन्न हो जाती है। ऐसी परिस्थितियों में शिक्षक प्रभावपूर्ण शिक्षण करने में सक्षम नहीं हो पाते है। वे अपने कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों का पालन उचित प्रकार से नहीं कर सकेंगे साथ ही शिक्षक विद्यार्थियों को उनके परिवार, समाज व देश के प्रति दायित्वों की जानकारी प्रदान करने में सक्षम नहीं हो सकेंगे, जिसका प्रभाव पूरे शिक्षण एवं राष्ट्र पर पड़ता है। इसलिए एक कुशल एवं प्रभावपूर्ण शिक्षक के लिए अपने व्यवसाय के प्रति संतुष्टि का होना अति आवश्यक है।अतः अध्ययनकर्ता ने माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और संस्थान के शैक्षिक वातावरण के अध्ययन किया है।

बी०ओ० स्मिथ- शिक्षण क्रियाओं का समूह है जो शिक्षा को उत्पन्न करने के लिए प्रेरित होता है। क्लार्क -शिक्षार्थियों में परिवर्तन लाने के लिए प्रक्रिया और प्रबंधन को शिक्षण माना जाता है।

एच०सी० मारीसन- शिक्षण एक प्रक्रिया है जिसमें अधिक विकसित व्यक्तित्व कम विकसित व्यक्तित्व के सम्पर्क में आता है और कम विकसित व्यक्तित्व की आगामी शिक्षा हेतु विकसित व्यक्तित्व व्यवस्था करता है।"

एच०सी० मारीसन की परिभाषा से स्पष्ट है कि शिक्षकों का व्यक्तित्व शिक्षण कलाविज्ञान पर/ उनका प्रभाव बड़ा होता है। इस प्रकार, विकसित व्यक्तित्व वाले शिक्षक सबसे प्रभावी शिक्षण के लिए सबसे उपयुक्त माने जाते हैं।

साहित्यावलोकन

पूर्व में किए गए अध्ययनों के आधार पर प्राप्त ज्ञान के अनुसार, अग्रवाल और चंदेल (2009) ने स्पष्टतः देखा कि शिक्षक प्रभावशीलता और कर्तृत्व संतोष में सीधे संबंध थे। जायसवाल और गुप्ता (2011) ने निर्धारित किया कि नियमित शिक्षक-शिक्षिकाएं अधिक प्रभावशाली थे, जिसका कारण उनकी उच्च योग्यता, प्रशिक्षण, सुविधाएं, वेतन, और नियोक्तृ प्रक्रिया आदि थीं। अग्रवाल (2012) ने इसे स्पष्टता से बताया कि दोनों प्रकार के विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावशीलता में सुधार की आवश्यकता थी और संगठनात्मक वातावरण ने शिक्षक प्रभावशीलता को प्रभावित किया। सक्सेना, जे०, और सिंह एस० (2008) ने अपने अध्ययन में देखा कि प्रभावी शिक्षण करने वाले शिक्षक संतुष्ट रहे।

समस्या कथन

माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और संस्थान के शैक्षिक वातावरण के अध्ययन

अध्ययन का उद्देश्य-

अध्ययन में निम्नलिखित उददेश्यों का अध्ययन किया गया है-

1. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता

2. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम तथा शैक्षिक वातावरण सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

अध्ययन में उद्देश्य के आधार पर निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है-

1. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता मध्य सम्बन्ध नहीं है।

2. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध नहीं है।

शोध विधि-

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सहसम्बन्धात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या-

प्रस्तुत अध्ययन में समग्र के रूप में खगड़िया जिला में स्थित सरकारी सहायता प्राप्त माध्यमिक स्तर के शिक्षकों को लिया गया है जो वर्तमान समय में शिक्षण के कार्य को सम्पादित कर रहे हैं।

खगड़िया अनुमंडल के रूप में मुंगेर जिले का भाग था। वर्ष 1943-44 में खगड़िया को अनुमंडल बनाया गया।10 मई 1981 को तत्काल प्रभाव से बिहार सरकार की 30 अप्रैल 1981 की अधिसूचना संख्या 7/T-1-207/79 के द्वारा इस जिला के रूप में प्रोन्नत किया गया था।

शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण के रूप में शिक्षक-प्रभावशीलता शोध को मापने हेतु प्रमोद कुमार एवं डी०एन० मूथा द्वारा निर्मित "शिक्षक प्रभावशीलता मापनी" जिसके अन्तर्गत शिक्षक प्रभावशीलता मापनी के पाँच आयाम शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि मापनी का निर्माण डॉ० प्रमोद कुमार एवं डॉ० (श्रीमती) जयश्री ध्यानी द्वारा निर्मित किया गया है।

सांख्यिकी विधियाँ

आँकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या हेतु सहसम्बन्ध आघूर्ण गुणांक सांख्यिकी विधियाँ का प्रयोग किया गया है।

सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता

"सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता" शिक्षा क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण विषय है। यह उन शिक्षकों की क्षमता और कौशल का संदर्भ है जो सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षा का कार्य करते हैं। यह प्रभावशीलता उनके शिक्षानिकेत्र में ज्ञान, कौशल, और उनकी शिक्षाविधि के प्रभावकारीता की माप करती है। एक प्रभावशील शिक्षक विद्यार्थियों के अध्ययन को प्रेरित करता है और उन्हें स्वयं का संदेश समझाने में मदद करता है। वे अपने शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सही और प्रभावी शिक्षा तकनीकों का उपयोग करते हैं और छात्रों को शैक्षिक और सामाजिक दृष्टिकोण से विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों के विकास में सकारात्मक प्रभाव डालना है, जिससे उनकी शिक्षा के क्षेत्र में स्थिरता और समृद्धि हो सके। इसमें शिक्षकों की नैतिकता, व्यक्तित्व, शैक्षिक कौशल, उनकी शिक्षा में उनकी सक्रियता, और उनकी शिक्षा में नवाचार की क्षमता शामिल होती है। इस प्रकार, सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता उनके शिक्षा कार्य में उत्कृष्टता को प्रेरित करती है और शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक परिणामों को साधने में मदद करती है।

माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और संस्थान के शैक्षिक वातावरण में संबंध

माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और संस्थान के शैक्षिक वातावरण के बीच संबंध का महत्वपूर्ण एवं गहरा संबंध होता है। शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता उनके शैक्षिक कौशल, विद्यार्थियों के साथ संवादात्मक रूप से संबंध स्थापित करने की क्षमता, और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का संदर्भ संस्थान के शैक्षिक वातावरण के साथ होता है क्योंकि यह संस्थान के शैक्षिक माहौल को प्रभावित करता है। एक उत्तम शैक्षिक वातावरण में, शिक्षकों को सहारा मिलता है उनकी प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए। संस्थान में संयुक्त उद्देश्यों, संवादात्मकता, सहयोग, और निष्कर्षण की वातावरण शिक्षकों

को शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने में सक्षम बनाता है। संस्थान के शैक्षिक वातावरण की गुणवत्ता शिक्षकों के विकास को प्रभावित करती है। उत्तम संशोधित शैक्षिक वातावरण उन्हें समर्थ बनाता है नवीनतम शैक्षणिक प्रवृत्तियों को समझने और उन्हें अपनाने के लिए। इसके अलावा, शिक्षकों को प्रोत्साहित किया जाता है कि वे स्वयं को संदेशनीय समाजवादी संविधान और नैतिक मूल्यों के साथ संबंधित बनाएं। इस प्रकार, माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता संस्थान के शैक्षिक वातावरण के साथ गहरा जुड़ाव रखती है, जो उन्हें उत्तम शैक्षणिक परिणाम प्राप्त करने के लिए उत्साहित करता है।

उद्देश्य-1 सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा जीवन सन्तुष्टि में सम्बन्ध का अध्ययन-

H: सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध है।

H01 सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध नहीं है।

सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध को दर्शाते सह-सम्बन्ध गुणांक

उद्देश्य-2 सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि में सम्बन्ध में सम्बन्ध का अध्ययन-

H_2 सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध है।

H01 सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध नहीं है।

सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य **सम्बन्ध को दर्शाते सह-सम्बन्ध**

शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम तथा जीवन सन्तुष्टि

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये-

1. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है।

2. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता की विमा व्यावसायिक, सामाजिक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है।

3. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता की विमा शैक्षिक एवं संवेगात्मक तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध नहीं है।

सुझाव

अध्यापक तभी अपने छात्रों का सर्वांगीण विकास करने में सफल नहीं होता है जब तक वह अपने शिक्षण को प्रभावी ढंग से न प्रस्तुत करे, और यह तभी सम्भव है जब तक वह अपने जीवन से संतुष्ट न हो। विभिन्न कारक शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा उसकी जीवन संतुष्टि को प्रभावित करते हैं। शिक्षा की गुणवत्ता बनी रहे उसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक अध्यापन कार्य को एक व्यवसाय के रूप में स्वीकार करे। वर्तमान में शिक्षकों की दशा में पर्याप्त सुधार की आवश्यकता है जिससे वह अपने व्यवसाय के प्रति न्याय कर सके।

सन्दर्भ सूची

1. अग्रवाल, एस. व चंदेल, एन.पी.एस. (2009) अनुदानित व गैर अनुदानित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का उनके कृत्य संतोष पर प्रभाव का अध्ययन, परिप्रेक्ष्य, वर्ष 16, अंक 3, दिसम्बर 2009 पृष्ठ संख्या 53-66.
2. जायसवाल, वी. व गुप्ता, पी. (2011) नियमित शिक्षक-शिक्षिकाओं व शिक्षामित्रों के मानसिक स्वास्थ्य के सम्बन्ध में उनकी प्रभावशीलता का अध्ययन, वैश्विक शैक्षिक परिप्रेक्ष्य, वाल्यूम-1, नम्बर-1 जून 2011, पृष्ठ सं. 31-42.
3. अग्रवाल, एस. (2012) अनुदानित व गैर अनुदानित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता पर प्रभाव का अध्ययन, शिक्षा चिंतन, त्रिमूर्ति संस्थान, अक्टूबर-नवम्बर पृष्ठ संख्या 14-22.
4. शिक्षा चिन्तन (2008), शैक्षिक त्रैमासिक शोध पत्रिका, त्रिमूर्ति संस्थान, नई दिल्ली, वर्ष 15 अंक 3, पृ. सं. 81-88.
5. डिल्लन एवं कौर (2010) उनके मूल्य पैटर्न के सम्बन्ध में शिक्षक प्रभावशीलता का एक अध्ययन, रीसेंट रिसोर्सेज इन एजुकेशन एण्ड साइकोलॉजी 15, 5 III IV
6. जोशी और परिजा, पी० (2000) पर्सनालिटी कोरिलेट्स ऑफ टीचिंग कम्पीटेन्सी, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, अंक-2. जनवरी-जून 2000, खण्ड-19, पृष्ठ 57-62
7. दवक्षनामूर्ति (2010) शिक्षको के व्यक्तित्व का प्रभाव, पेशे के प्रति दृष्टिकोण और छात्रो की शैक्षणिक उपलब्धि पर शिक्षण प्रभावशीलता, एडूट्रैक, खण्ड-9(9), 34, नीलकमल पब्लिशिंग हाउस, हैदराबाद।
8. गर्ग और इस्लम (2018) "माध्यमिक विद्यालय स्तर पर भावनात्मक खुपिया के सम्बन्ध में शिक्षक प्रभावशीलता का एक अध्ययन", इन्टरनेशनल जर्नल इन सोशल साइन्सेज, खण्ड-8 (5)

9. अकरम (2019) माध्यमिक विद्यालय स्तर पर शिक्षक प्रभावशीलता और छात्र उपलब्धि के छात्रों के बीच सम्बन्ध बुलेटिन ऑफ एजुकेशन एण्ड रिसर्च, अगस्त 2019, खण्ड-41(2), पृष्ठ 93-108

10. कुहन, बी0 जे0 (1982) टीचर परसनैलिटी टाइप एवं जॉब सैटिसफैक्शन, डिजरटेशन एब्सट्रेक्ट इन्टरनेशनल, खण्ड-43(1) पृष्ठ 104ए

11. इन्दोरिया, नर्बदा (1983) शिक्षकों की प्रभावशीलता, समायोजन एवं उनकी शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, एम० डी० एस० विश्वविद्यालय अजमेर, राजस्थान ।

12. पुरोहित, जगदीश नारायण, व्यास हरिश्चन्द्र, शर्मा, डॉ० मुरली मनोहर, शिक्षण, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

13. पाठक, पी०डी० - शिक्षण की प्रभावशीलता, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

14. कपिल, एच० के०- अनुसंधान विधियाँ, जनसंख्या, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

15. कौल, एल०- मैथेडोलॉजी ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, विकास पब्लिकेशन हाउस नई दिल्ली।